Chap - 6

षष्टम् अध्याय

उपसंहार

उपसंहार

भारत सहित विश्व के अनेक देशो ने इस सदी के अन्त तक में अनेक प्राकृतिक एंव मानव सर्जित विपदाओं की दारूण पीड़ाओं को झेला है। अब नयी सदी का आगमन हर्षोउल्लास से करते हुए यह आशा की जा रही है कि आने वाली सदी मानव- सृष्टि के लिए कल्याणकारी एंव आनन्ददायिनी होगी।

समस्त विश्व नयी सदी के आगमन की तैयारियों में व्यस्त है। चारों ओर रोशनीयों की चमक-दमक के बीच हर्ष और उल्लास युक्त नृत्य एंव संगीत की महफिलें सजने लगी हैं।विश्व के लगभग सभी देशो में रंगारंग के अनेक समारोहो का आयोजन किया जा रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर लोकरंजन के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा हैं। प्रचार माध्यमों द्वारा इन कार्यक्रमों का आनन्द लोगों तक घर बैठे पहुँचाया जा रहा है। अत: ऐसा लगता है कि मानो विश्व सीमट कर एक दूसरे के बहुत नजदीक आ गया है।

विगत सदी में विश्व-मैत्री के उद्देश्य से विश्व के विभिन्न देशों के बीच अनेक राजनीतिक, आर्थिक एंव सांस्कृतिक करारो द्वारा परस्पर सद्भाव और विश्वासयुक्त सम्बंधो की स्थापना की गई।आत्मनिर्भरता के सघन प्रयत्नों में पारस्परिक सहयोग की भावना को बलवती बनाने का यत्न होता रहा। विश्वकल्याण और मानवतावाद की प्रतिष्ठा एंव रक्षा के उद्देश्य से अनेक अन्तर्राष्ट्रीय बैठकें आयोजित होती रही। ऐसी स्थिति में राष्ट्रीय चेतना के सन्दर्भ में विचार करना अप्रांसगिक कतई नहीं है क्योंकि कुछ प्रश्न ऐसे होते हैं जो हर समय सामयिक और महत्त्वपूर्ण रहते हैं। २०वीं शताब्दी के वैज्ञानिक आविष्कारो ने अनेक चमत्कारीक सिद्धियाँ एंव उपलब्धियाँ प्राप्त करके मानव जीवन को समृद्ध और दीर्धायु बनाया है लेकिन विड़म्बना यह है कि वैज्ञानिक वरदान आज मानव-समाज के लिए अभिशाप भी सिद्ध हो रहे हैं। अणु-परमाणु शक्तियाँ युक्त विज्ञान के नित-नवीन घातक और मारक शस्त्रों के प्रयोग के लिए आतुर देशो ने तृतीय विश्वयुद्ध के कगार पर आज विश्व को लाकर खड़ा कर दिया है। समय-समय पर दो देशो के बीच आरभ्भ होने वाले युद्ध,महाविनाश की आशंका को जन्म देकर विश्वभर मे आतंक और भय को फैला देते हैं। विश्वव्यापी आतंकवादी गतिविधियाँ,स्वार्थ और संकीर्णता से प्रेरित षड़यन्त्रकारी प्रवृत्तियाँ, उन्नत, सबल एंव समृद्ध देशो के प्रभाव

क्षेत्रो के विस्तार भय से अविकसित देशो के लिए उत्पन्न संकट आदि ने वर्तमान युग में मानव-मात्र के लिए चिन्ता, भय और निराशा के घने कोहरे का निर्माण किया है। ऐसी स्थिति में अन्तर्राष्ट्रीयता एवं विश्वबन्धुत्व की परिकल्पना की सार्थकता ही राष्ट्रो की बरबादी को रोक सकती है,वस्तुत:अन्तर्राष्ट्रीयता की सफलता राष्ट्रीय चेतना की स्वस्थ अनुभूति में अन्तर्निहित है। अत: राष्ट्रीय चेतना वर्तमान युग की अनिवार्यता है।

राष्ट्रीय स्तर पर समकालीन परिस्थितियों ने न केवल प्रबुद्ध वर्ग को, अपितु एक आम आदमी को भी यह सोचने के लिए मजबूर किया है कि क्या पचास साल पूर्व जिस स्वतन्त्र भारत का सपना संजोकर देशवासियों ने तन,मन, घन से त्याग और बलिदान दिया था,क्या आज भारत का वह स्वरूप साकार हुआ है? राजनीति के क्षेत्र में फैली अनिश्चितता एंव अराजकता, राजनेताओं की भ्रष्ट और दलबदल की नीतियाँ, उनके मूल्यहीन चरित्र, सामाजिक विघटन,सांस्कृतिक अवमूलन, राष्ट्रविरोधी आतंकवादी एवं अलगाववादी प्रवृत्तियाँ, आर्थिक क्षेत्रो में फैली भ्रष्टाचारी नीतियाँ, देश की सीमाओं पर हो रहे हिंसात्मक आक्रमण, पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते हुए प्रभाव आदि से देश का हर नागरिक पीड़ित एंव चिन्तित है। इसी आम मनुष्य की टूटन, निराशा, भय, चिन्ता आदि के निराकरण के लिए भी स्वस्थ एंव प्रबल राष्ट्रीय चेतना की तंरगों का उद्धेलन आज की परिस्थितियों की सर्वप्रथम आवश्यकता है। अब प्रश्न यह उठता है कि जिस प्रकार स्वतंन्त्रता आन्दोलन की सफलता के लिए राष्ट्र-प्रेम की सशक्त धारा को बहाने में हिन्दी साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान था उसी प्रकार क्या आज का हिन्दी साहित्य भी राष्ट्रीय-भावना को बनाये रखने में सार्थक और सक्षम है? क्या आज भी साहित्यकार अपनी सृजनशीलता के राष्ट्रीय महत्त्व को बनाये रखने में सजग और सभान है? इसी प्रत्युत्तर की खोज़ में प्रस्तुत शोध कार्य के विषय का चयन हुआ है। यह मेरे और मेरे जैसे अनेक युवा धड़कनों के प्रश्नों का उत्तर प्रस्तुत करके राष्ट्रीय हितो के व्यापक संरक्षण में यथासंम्भव योगदान के लिए प्रेरित करे यही शोध कार्य की सार्थकता है।

अध्ययन के उपर्युक्त पक्षों को घ्यान में रखते हुए साठोत्तरी हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वरूप निर्धारण का एक लघु प्रयास प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में किया गया है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि हिन्दी साहित्य के व्यापक स्वरूप को घ्यान में रखते हुए विस्तार भय से प्रस्तुत विषय को उपन्यास और कहानी की विधा के रूप में प्राप्त कथा-साहित्य तक ही सीमित रखा गया है।

सर्वप्रथम, राष्ट्रीय चेतना के स्वरूप निर्धारण से सम्बन्धित पाश्चात्य एवं भारतीय विद्धानों द्वारा दी गई परिभाषाओ का आकलन करते हुए यह निष्कर्ष प्राप्त किया गया है कि राष्ट्रीयता केवल वस्तुमूलक एवं विचारमूलक नहीं है। मानव-मन के अंसख्य मनोवेगों के उद्भव और विकास की भाँति राष्ट्रीय भावना भी मानव-ह्रदय की अनुभूत गहराईयों से संपृक्त है। यह एक ऐसी प्रबल और तीव्र अनुभूतिपरक शक्ति है जो मानव-ह्रदय में अनेक रूपों से अंकुरित और पल्लवित होती हैं।

राष्ट्रीय चेतना की विशद परिकल्पना के अन्तर्गत निम्न अनुभूतियों का महत्त्व विशेष है --

१) विश्व के व्यापक मंच पर अपने राष्ट्र के अस्तित्व की मौलिक पहचान बनाने की आकांक्षा हो।

२) जन-जीवन की आशा-आकांक्षाओ की पूर्ति करते हुए देश की प्रगति, विकास और उत्थान के लिए प्रयत्नशील हो।

३) देश की स्वतन्त्रता और अखण्डता की रक्षा के लिए त्याग और बलिदान की तीव्र उत्कंठा हो।

४) निर्जीव और मृत रूढ़ियों, परम्पराओं एवम् मान्यताओं के प्रति आक्रोश हो।

५) अव्यवस्था, अन्याय, भ्रष्टाचार, आपखुदशाही एंव राष्ट्रविरोधी गतिविधियों के प्रति तीखा प्रतिभाव आदि।

हमारी राष्ट्रीय चेतना अपने दिव्य आलोक से समस्त विश्व में वन्दनीय है। इसमें विश्व मानवता के कल्याण की शाश्वत भावना निहित है। स्वतन्त्र भारत की राष्ट्रीय चेतना जनतन्त्र में दृढ़ आस्था और विश्वास का परिचायक है।

राष्ट्रीय चेतना के व्यापक स्वरूप निर्धारण में देशभक्ति, राजनीति, राष्ट्रभाषा,साहित्य और अन्तर्राष्ट्रीयता के साथ उसके सम्बन्ध को स्पष्ट किया गया है। देशप्रेम और राष्ट्रीय चेतना दोनों एक नहीं है, फिर भी दोनों के बीच निकट का सम्बन्ध है। देशभक्ति, राष्ट्रीय चेतना की मानसिकता के निर्माण में सहायक है तो राष्ट्रीय चेतना, देशभक्ति का मार्ग प्रशस्त करती है। इस प्रकार राजनीति,राष्ट्रीयता का एक ऐसा अंग है जिसकी सफलता और असफलता पर देश की उन्नति और विकास निर्भर रहता है। राष्ट्रभाषा, राष्ट्रीय जागरण को मुखरित करती है। आज के बौद्धिक युग में साहित्यकार राष्ट्रीय चेतना .की अनुभूति और वैचारिक सत्ता को विश्वजनीन बनाने का

कवि कर्म करता है। अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना के विकास द्वारा स्वस्थ राष्ट्रीयता का निर्माण किया जा सकता है और राष्ट्रीयता द्वारा मानवता के व्यापक हितो की रक्षा करते हुए अन्तर्राष्ट्रीयता को सफल बनाया जा सकता है।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय चेतना एक ऐसी सूक्ष्म प्रवृत्ति है जो अन्य अनेक मानवीय वृत्तियों से धनिष्ट रूप से जुड़ी हुई है। देशप्रेम ,राजनीति,राष्ट्रभाषा,साहित्य आदि राष्ट्रीय चेतना के सहायक अंग हैं। वे अभिन्न रूप से राष्ट्रीय चेतना से जुड़े हुए हैं तथापि उससे कुछ भिन्न भी है। आज की विनाशक परिस्थितियों से समुचे विश्व का प्रत्येक नागरिक कराह रहा है। सभी राष्ट्र निष्कपट भाव से परस्पर सहयोग-परक दृष्टिकोण को रखते हुए लघुतम राष्ट्र की सत्ता और अस्तित्व को सार्वभौमिक प्रतिष्ठा प्रदान कर रहे हैं,जिसमें'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को साकार किया जा सके।

प्रस्तुत अध्ययन के दूसरे अध्याय में भारतीय-साहित्य में अनुप्राणित राष्ट्रीय भावना की दीर्धकालीन परम्परा को बतलाया गया है। इसी परम्परा में आगे चलकर अपने आरम्भकाल से ही हिन्दी साहित्य में प्राप्त राष्ट्रीय भावना को आलोकित किया गया है। आदिकालीन, भक्तिकालीन एवं रीतिकालीन साहित्य के पश्चात आधुनिक युग के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वरूप को उजागर किया गया है। इस प्रकार साठोत्तरी हिन्दी साहित्य की पूर्ववर्ती कड़ियों के रूप में हिन्दी साहित्य और राष्ट्रीय भावना के घनिष्ट सम्बन्धों को उजागर किया गया है।

तृतीय अध्याय में युगीन परिवेश का परिचय प्रस्तुत है। आ० रामचन्द्र शुक्ल जी ने अपने 'हिन्दी साहित्य के इतिहास'मे किसी भी देश के साहित्य और जनता की चित्तवृत्तियों का धनिष्ट सम्बन्ध दर्शाते हुए यह कहा है कि जनता की चित्तवृति बहुत कुछ राजनीतिक, सामाजिक, साम्प्रदायिक तथा धार्मिक परिस्थिति के अनुसार होती है।अत: स्पष्ट है कि राष्ट्र की बदलती हुई परिस्थितियों के आकलन द्वारा उस युग की मानसिकता को समझा जा सकता है। साहित्य के निर्माण में रचनाकार की इसी मानसिकता की प्रेरणा प्रधानत: कार्य करती है। सन् १९६० ई० के आसपास की स्वतंन्त्रता प्राप्ति के पश्चात की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों पर यहाँ विचार किया गया है। परिस्थितियों के आलोक में यह स्पष्ट है कि वैज्ञानिक युग के प्रभाव के परिणाम स्वरुप देश की सामाजिक

परिस्थितियों में तीव्रता से परिवर्तन हुआ है। समाज के हर एक वर्ग के व्यक्ति का बौद्धिक विकास, इस युग की सामाजिक परिस्थिति के परिवर्तन का प्रमुख कारण है। यद्यपि देश के प्रत्येक नागरिक का जीवन आज भी अनेक परम्परागत सामाजिक बन्धनों से उत्पन्न समस्याओं से जूझ रहा है तथापि समाज का अद्यावधि उपेक्षित अंग, विशेषकर नारी समाज और निम्नवर्गीय पीड़ित समाज की परिस्थितियों में सूचक बदलाव को देखा जा सकता है।

राजनीतिक दृष्टि से समस्त विश्व के रंगमंच पर भारत एक सशक्त विकसनशील लोकतान्त्रिक देश के रूप में प्रतिष्ठित है।गरीमा की इस ऊँचाई तक पँहुचाने में विभिंन्न क्षेत्रो के महिमामयी व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण योगदान तो है,साथ ही शासनतन्त्र की विभिन्न नीतियों एंव गतिविधियों का भी महत्त्व कुछ कम नहीं है। लेकिन देश का आज यह दुर्भाग्य ही है कि सरकारी शासन व्यवस्था एवं राजतंत्र से असंतुष्ट कतिपय मानव संगठन राष्ट्र-विरोधी प्रवृत्तियों द्धारा आंतक और हिंसा का वातावरण उत्पन्न करके उसका सशक्त प्रभाव जमाने में निरन्तर कार्यरत है।एक प्रकार से भारत के लोकतान्त्रिक राष्ट्र की सुरक्षा के लिए सरकार और जनता के समक्ष यह एक प्रमुख चुनौती है।

इस अघ्याय में आर्थिक दृष्टि से देश की विकसनशील आर्थिक स्थिति पर विचार हुआ है। ततपश्चात इसमें देश की सांस्कृतिक समस्या का निरुपण करते हुए समकालीन सांस्कृतिक परिस्थितियों का चित्रण किया गया है। देश आज जिस गम्भीर सांस्कृतिक संकट का सामना कर रहा है वह है, विदेशी संस्कृति के व्यापक एवं गहन प्रभाव से उत्पन्न भारतीय संस्कृति की सुरक्षा का। आधुनिक भावबोध से उत्पन्न बौद्धिक विकास के कारण सांस्कृतिक परिवेश में आमूल परिवर्तन को देखा जा सकता है। समस्त विश्व में सर्वाधिक प्राचीन एवं सशक्त मानी जाने वाली भारतीय संस्कृति पर आज संकट के घीरे हुए बादलों का निरुपण यहाँ प्रस्तुत है।

शोध कार्य का चतुर्थ अघ्याय हिन्दी गद्य-साहित्य की प्रमुख एवं प्रसिद्ध विधा उपन्यास से सम्बन्धित है। साठोत्तरी हिन्दी साहित्य के अनेक उपन्यासों में से लगभग सत्ताईस उपन्यासों का अनुशीलन यहाँ प्रस्तुत है। इन उपन्यासों के कथात्मक परिचय के द्धारा इनमे निरुपित राष्ट्रीय चेतना के स्वरुप पर प्रकाश डाला गया है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से इन्हें तीन विभागों में

विभाजित किया गया है--

१. राष्ट्रीय चेतना का राजनीतिक स्वरुप।

२. राष्ट्रीय चेतना का सामाजिक एवं आर्थिक स्वरुप।

३. राष्ट्रीय चेतना का धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्वरुप।

वस्तुतः ये राष्ट्रीय चेतना के विभिन्न पक्ष है। देश के राजनीतिक परिवेश पर आधारित सोलह उपन्यास दो प्रकार के हैं-प्रथम में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व की स्वातन्त्र्य आन्दोलनकालीन देश की अराजक परिस्थितियों का आकलन है। इनमें 'तमस', 'कितने चौराहे', ' मुठ्ठी भर काँकर' आदि स्वतन्त्रता आन्दोलन की पृष्ठभूमि पर रचित हैं। इनमे शहीदो के बलिदान, देशप्रेम आदि के निरूपण द्वारा स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए दिये गये अनगिनत बलिदान की ओर आज की पीढ़ी का ध्यान आकर्षित किया है। देश की सीमाओं पर खड़े समकालीन संकट के प्रति नवयुवाओं में जागरूकता बनी रहे इस ओर लेखक का संकेत है। देश की अखंडता पर प्रहार करने वाली कतिपय स्वार्थी राजनीतियोज्ञों के दुष्परिणाम, देश और देश की जनता के लिए किसी दैवी अभिशाप से कम नहीं है। देश की एकता और सुख-शान्ति को तहस-नहस करके, मानव संहार की विनाशक लीला खेलने वालो से जागृत रहने का एक छिपा हुआ सन्देश भी इनमें है।दूसरे,देश के अनेक सीमावर्ती राज्यों के लिए शरणार्थियों की एक गम्भीर समस्या है।'लौटे हुए मुसाफिर' और 'मुठठी भर काँकर' जैसे उपन्यास इससे सम्बन्धित हैं। इनमें शरणार्थियों की समस्या के कारण और परिणाम को उजागर करके उसे सुलझाने का मार्ग-दर्शन इनमें प्रस्तुत किया है।

राजनीतिक चेतना से सम्बन्धित दूसरे प्रकार के उपन्यासो में स्वातन्त्र्योत्तरकालीन राजनीतिक परिवेश में हो रहे परिवर्तन,परिस्थितियों के पतन के विभिन्न पहलूओ और स्वरूपों का यथार्थ चित्रण एंव दिन-प्रतिदिन गहराते हुए राजनीतिक संकट का तादृश्य चित्रण इसमें प्राप्त हैं -- 'महाभोज', 'महामहीम', 'रागदरबारी', 'दारूल शफा', 'एक और मुख्यमंत्री' जैसें उपन्यास इनके अन्तर्गत आते हैं। इनमें राजसत्ता की बागडोर सम्भालने वाले राजनेताओं के भ्रष्ट एंव कुटिल चरित्र, इनके चरित्र के दोहरे रूप,जनहित विरोधी इनकी रीति-नीतियाँ आदि आज राष्ट्रीय हित के लिए घातक सिद्ध हुए हैं। इस प्रकार सत्ताधारी और विरोधी राजनीतिक दलों की गतिविधियाँ,अपनी राजसत्ता को बनाये रखने में सत्ताधारी दल का दलीय जोड़-तोड़ की

की कूटनीतियाँ, प्रचार माध्यमों का निजी स्वार्थ के लिए दूरूपयोग, गुंड़ागर्दी, पूंजीपत्तियों से साँठ-गाँठ,लोकतान्त्रिक चुनाव में विजय के लिए अपनाये जाने वाले चुनावी हथकण्ड़े, उम्मीदवारों के चयन में भाई-भतीजावाद, टिकिटो की खरीदी-ब्रिकी, वोट की प्राप्ति के लिए लोक-कल्याणकारी योजनाओं की घोषणा,जनता को आकर्षित करने के अनेकानेक यत्न आदि,आज के चुनावों की भ्रष्ट प्रकिया के यथार्थ चित्र प्रस्तुत करते हैं। देश की लोकतान्त्रिक शासन-व्यवस्था को असफल बनाने वाले इन कारणों का प्रभावशाली चित्रण इनमें किया है।जनतान्त्रिक विफलताओं से जनता में फैले अविश्वास,अनिश्चितता, भय, अनैतिकता एंव जीवन-मूल्यों के ह्रास आदि से इनका सीधा सम्बंध हैं। राजनीतिक भ्रष्टाचार के दुष्परिणामों तक ही इनका सीधा सम्बंध नहीं हैं अपितु देश के सांस्कृतिक पतन का प्रमुख कारण भी यही है। देश में समय-समय पर उठनेवाली राष्ट्र विरोधी गतिविधियों के प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष कारण भी हमारी भ्रष्ट राजनीतिक परीस्थितियाँ हैं। 'काली आँधी' जैसे उपन्यास द्धारा देश की राजनीतिक व्यवस्था में नारियों की योग्यता एंव कुशलता का महत्त्वपूर्ण योगदान उजागर होता है।

देश के सामाजिक एंव आर्थिक परिवेश पर आधारित उपन्यासों में 'पचपन खम्भे लाल दीवारें','नदी फिर बह चली' आदि हैं। इनमें परिवार की उपेक्षित नारी-जीवन की शोषित-पीड़ित स्थिति का परिचय एवं सामाजिक क्षेत्र में नारी की भूमिका, सामाजिक विकास में उनके योगदान आदि को भी व्यंजित किया गया है।आधुनिक नारी के व्यक्तित्व एंव उनके जीवन में आ रहे बदलाव, राष्ट्र के सामाजिक-पक्ष का अभिनव पहलू है।अधिकार और न्याय की लड़ाईयों में उनका साहस, शौर्य,बलिदान आदि न केवल सराहनीय है,अपितु राष्ट्रीय गौरव का अधिकारी है।भारतीय नारी अपने सामर्थ्य,सूझबूझ,निष्ठा, कर्मठत्ता, साहस, समर्पण, एंव बलिदान की भावना के बल पर देश के लगभग सभी क्षेत्रों के विकास में पुरूषों से कन्धे से कन्धा मिलाकर अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही है । पुलिस अधिकारी किरण बेदी जैसे कर्मठ और देशभक्त,नारी चरित्र,जिनका बहुमान विदेशी पुरस्कार द्धारा विदेशों में हुआ,भारतीय नारी जगत का गौरव है।ऐसे अन्य अनेक क्षेत्रों में आज भी भारतीय नारियाँ कार्यरत हैं। यह उल्लेखनीय है कि नारियों के कर्म-क्षेत्र का आज व्यापक विस्तार हुआ है, लेकिन साहित्य में उनका सफल और व्यापक अंकन अभी शेष है।

देश की सामाजिक उन्नति का प्रमुख आधार है सामाजिक संगठन,भाईचारा एंव एकता।देश में आज स्वार्थी लोग अपनी स्वार्थसिद्धि के

लिए लोगों की धार्मिक भावना की आड़ में समाज के विघटन का कार्य कर रहे हैं। धार्मिक असहिष्णुता एंव अज्ञान से उत्पन्न संकीर्णता ने हमारे सामाजिक ढाँचे को झकझोर दिया है। समय-समय पर हो रहे दंगे, फसाद, आगजनी की वारदातें, छुरेबाजी, अपहरण, आतंकवाद जैसी विघटनकारी परिस्थितियों द्वारा देश के सामाजिक संगठन, आर्थिक विकास, शान्ति और समृद्धि के मार्ग में तीव्र अवरोध उत्पन्न होते हैं। भारत की सामाजिक व्यवस्था अद्यावधि पारिवारिक एंव सामाजिक संगठन को केन्द्र में रखकर चली है।आज की सामाजिक व्यवस्था पाश्चात्य विचारधारा एवं संस्कृति का प्रभाव ग्रहण करके मानव केन्द्रित हो गई है।अत:आज की सामाजिक विघाटन की समस्या राष्ट्र की प्रमुख समस्या बन गई है।

कुछ सामाजिक उपन्यासों में पारिवारिक विघटन की ज्वलन्त समस्याओं को निरूपित करके उसके दुष्परिणामों से आगाह किया है। कहीं पर यह विघटन सयुंक्त परिवारो का है तो कहीं दाम्पत्य जीवन का। विघटन के प्रमुख कारण के रूप में जीवन का भोगवादी अभिगम, सांस्कृतिक मूल्यों की गिरावट, आर्थिक स्वतन्त्रता,बौद्धिकता का विकास तथा स्वकेन्द्रिय विचारधारा की महत्ता आदि हैं।

भारतीय समाज की एक अन्य समस्या है चतुष्वर्गीय व्यवस्था की विकृति से उत्पन्न निम्नवर्गीय समाज की। अंग्रेजी शासन से मुक्त होने पर इन लोगों मे भी एक नई आशा थी, देश में नये समाज रचना की। भारत के लोकतान्त्रिक संविधान में प्रत्येक मनुष्य के लिए सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एंव राजनीतिक समानता की व्यवस्था उपलब्ध करवाने का महत्व स्वीकार किया गया है। लेकिन देश के भ्रष्ट शासनव्यवस्था में पूँजीपत्तियों, मूडीवादियों और नेताओं की मिलीभगत ने शोषित समाज को अधिक शोषित किया है। ऐसे गरीबो की दयनीय स्थिति का चित्रण करने वाले उपन्यास हैं-'धरती धन न अपना', 'जल टूटता हुआ', 'अग्निबीज', 'अलग-अलग वैतरणी'आदि प्रमुख हैं। आज़ाद भारत के ग्रामीण- समाज में कृषक एंव श्रमिक लोग एक लम्बे अरसे तक दमित और शोषित रहे हैं लेकिन अब शनै:-शनै: इनमें नयी चेतना पनपने लगी है।प्रचार माध्यमों के प्रभाव,पाश्चात्य सांस्कृति का आक्रमण एवं शिक्षा के व्यापक प्रचार से देश के गरीब अपनी दयनीय स्थिति और अधिकारों से अवगत होने लगे हैं।

इस प्रकार साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में देश के सामाजिक जीवन के बिखराव और संघर्ष, जन-जीवन में पनप रही अनैतिकता,

मूल्यहीनता आदि का निरूपण करके राष्ट्र पर मँडरा रहे सामाजिक-सांस्कृतिक संकट के काले-बादलों पर गहराती हुई छाया का यथार्थ चित्रण किया है। दूसरी ओर नव-जागृति,नये समाज की रचना, मानवतावादी दृष्टिकोण, सुधारवादी और समानता की विचारधारा को लेकर चलनेवाली नई पीढ़ी का आगमन तथा सामाजिक बदलाव की प्रकिया पर लेखको ने ध्यान केन्द्रित किया है।

कतिपय उपन्यास में राष्ट्र के हित के लिए हिन्दू-मुस्लिमों के पारस्परिक सद्भाव और ऐक्य की आवश्यकता को लक्षित किया है। भ्रष्ट एंव स्वार्थी राजनेताओं और कोमवादी तत्त्वों द्वारा देश में साम्प्रदायवाद का विष पुन:फैलाया जा रहा है।राष्ट्रीय अस्मिता के लिए यह बहुत बड़ा खतरा है। इस प्रकार प्रस्तुत अध्याय में राष्ट्रीय चेतना के जिन स्वरूपो पर प्रकाश पड़ता है वह संक्षेप में इस प्रकार हैं--

१. देश की रक्षा के प्रति जागरूकता को बनाये रखनेवाली चेतना।
२. पतनोन्मुखी शासनव्यवस्था के व्यापक चित्र द्वारा देश को राजनीतिक समस्याओं से अवगत कराने वाली राजनीतिक चेतना।
३. सामाजिक उपन्यासों में नारी चरित्र में आ रहे बदलाव, नारियों की दयनीय अवस्था, राष्ट्रीय गौरव-प्रतिपादन में नारियों का महत्त्वपूर्ण योगदान आदि के निरूपण में सामाजिक चेतना।
४. सामाजिक विघटन का स्वरूप-पारिवारिक टूटन और बिखराव, दाम्पत्य जीवन की असफलता और अलगता आदि द्वारा सामाजिक समस्याओं के निराकरण को व्यक्त करनेवाली सामाजिक चेतना।
५. धार्मिक असहिष्णुता या धर्मान्धता द्वारा हिन्दू-मुस्लिम समाज का आपस मे संघर्ष तथा उसके दुष्परिणाम को निरूपित करके राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता पर बल देती हुई सामाजिक चेतना आदि।

पचंम अध्याय में हिन्दी गद्य साहित्य की प्रमुख विधा हिन्दी कहानियों पर विचार किया गया है। साठोत्तरी की कालावधि में अनेकानेक कहानिकारों की रचनाएँ प्राप्त होती हैं। अनेक कहानियों के अध्ययन के पश्चात् इस शोध कार्य की परिसीमा में आने वाली लगभग बत्तीस कहानियों का परिचय देते हुए उन पर विचार किया गया है।इन कहानियों की संक्षिप्त कथावस्तु में राष्ट्रीय चेतना के व्यापक प्रभाव को पाना असम्भव है तथापि इनमें राष्ट्रीयता की गहन भावानुभूति एंव वैचारिक चिंतन प्रकिया को देखा जा सकता है। इनमें राष्ट्रीय चेतना के जो विभिन्न पक्ष मुखर हुए हैं

वे निम्नलिखित हैं --

प्रथम-'मुर्दा मैदान', 'परमात्मा का कुत्ता', 'दौने की पतियाँ',जैसी कहानियों में लेखक की आम जनता के प्रति मानवीय सम्वेदना तथा उनमे उंभरे राजनेताओं के प्रति कटु आलोचनात्मक दृष्टिकोण को देखा जा सकता है। समकालीन भ्रष्ट राजतन्त्र, कपटी एवं स्वार्थी राजनेताओं की जनता के प्रति उदासीनता एवं उपेक्षा,उनके दोहरे व्यक्तित्व, पूँजीपत्तियों के साथ राजनीतिक साँठ-गाँठ, सरकारी कर्मचारियों में फैली निष्क्रियता एवं अकर्मण्यता आदि आम जनता की पीड़ा कष्ट, संधर्ष एवं मानसिक व्यथा के प्रमुख कारण है। देश के राजनीतिक परिवेश की त्रुटियों के प्रति लेखक का विचारात्मक आक्रोश और देश की व्यथित-पीड़ित जनता के प्रति सहानुभूतिपरक चिन्तन एवं सम्वेदना उनकी राष्ट्रीय भावना को इंगित करती है। यह देश के गौरव को कलंकित करनेवाला दुर्भाग्य ही है कि आज़ादी के पचास साल बाद भी एक आम आदमी के जीवन निर्वाह और जीवन सुरक्षा की व्यवस्था करने में राजतन्त्र और उनकी नीतियाँ असफल रहें है।

दूसरे,सत्तरह कहानियों में राष्ट्रीय चेतना के सामाजिक पक्ष का परिचय दिया गया है। 'पानी', 'इज्जत ','सर्पदंश', आदि जैसी कहानियों में देश की सामाजिक व्यवस्था के दोषो से उत्पन्न लोगो के दुःख दर्द की कथा है।इनमें सामाजिक सुधार की दिशा को इंगित किया गया है।अभिजात्य वर्ग झुठी आन-बान-शान के लिए निर्दोष गरीबों पर अत्याचार करते हुए उन्हें कैसे दारूण यातनाँए सहने के लिए मजबूर करते हैं, इनका मार्मिक चित्रण यहाँ पाया जाता है। समाज के पीडित-शोषित लोगों के प्रति लेखक की सम्वेदना के साथ सामाजिक सुधार की आकांक्षा निहित है। यह हमारी राष्ट्रीय संस्कृति पर कंलक के समान है। लेखक की राष्ट्रीय भावना ने समाज की जर्जरित व्यवस्था के मलबे की रक्षा के स्थान पर सांस्कृतिक मूल्यों से युक्त मानवतावादी नई सामाजिक व्यवस्था का निर्देश किया है।

'एक औरत एक जिन्दगी', 'एक टुकड़ा धरती', 'छोटे शहर की शकुन्तला', 'मैं नारी हुँ' जैसी कहानियों में आधुनिक नारी के नए रूप का सफल अंकन करके उनके सामाजिक एंव राष्ट्रीय महत्व को प्रतिपादित किया गया है। प्रतिकूल परिस्थितियों से जुझती एवं अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करती हुई आज की नारी अपनी सम्पूर्ण शक्तिमत्ता के साथ अपने छोटे से क्षेत्र में रहकर भी देश की अस्मिता को गौरवपूर्ण बना रही है। आज की भारतीय नारी अपने

अदम्य साहस, आत्मगौरव, जीवन-संघर्ष से अकेले जुझने का बल लिए हुए है। नारी के जिस रूप को इनमें अंकित किया गया है वह देश के सामाजिक गौरव की आधारशीला है।

'माँग', 'बेटे की बिक्री','विद्रोह,' पीढ़ियाँ ',जैसी कहानियाँ सामाजिक सुधार से संबन्धित हैं। दहेज जैसी कुप्रथा भारतीय समाज का एक दीर्घकालीन दुषण एंव अमिट कलंक सा है जो आज भी देश की अनेक युवा नारियों के जीवन को नरक बना देता है।जिस देश में समाज का अभिन्न अंग शोषित, पीड़ित एवं उपेक्षित हो, उस देश की प्रगति कैसे सम्भव है ? सामाजिक व्यवस्था राष्ट्रीय विकास का अनिवार्य अंग है।

अर्थ के असमान वितरण, पूँजीवादियों द्धारा गरीबों का आर्थिक शोषण, मज़दूरों की दयनीय दशा आदि सामाजिक बुराइयों को इंगित करने वाली कतिपय कहानियों का भी यहाँ समावेश हुआ है। आधुनिक युग में शिक्षा के क्षेत्र में फैले भ्रष्टाचार ने देश में सांस्कृतिक संकट को उत्पन्न किया है। 'लाश' जैसी कहानी इसी सांस्कृतिक पतन की ओर उन्मुख समाज का परिचय देती है।

इस प्रकार प्रस्तुत अध्याय के अन्तर्गत कहानियों में निरूपित राष्ट्रीय भावना विविध रूपों में परिव्याप्त हुई है। कहीं लेखक समकालीन भ्रष्ट राजतन्त्र, कपटी एवं स्वार्थी राजनेताओं के कारण उत्पन्न जनता की व्यथा और पीड़ा से खिन्न एवं रूष्ट है।लेखक की राष्ट्रीय चेतना यहाँ आम जनता की परेशानियों, कष्ट, पीड़ा और व्यथाओं से जुड़कर उभरी है।कतिपय कहानीकारों में सामाजिक दूषण के प्रति आक्रोश है। लेखक की सम्वेदना समाज के अछूत, उपेक्षित वर्ग के लोगो के साथ जुड़कर देश की सामाजिक व्यवस्था के दोषों को उजागर करती है। कुछ कहानियों में राष्ट्र के गौरव समान भारतीय नारियों के नये उभरते हुए स्वरूप और उनकी महत्ता को प्रतिपादित किया है,तो कहीं समाज के इस अभिन्न अंग की दयनीय दशा को चित्रित किया है। सामाजिक परिवेश के कतिपय दूषण जो आज भी नारियों के जीवन को जीते जी नरक बना देते हैं उनकी तीव्र टीका करते हुए कहानीकार सामाजिक सुधार का कार्य भी करता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि साठोत्तरी हिन्दी गद्य-साहित्य में आज भी राष्ट्रीय चेतना के विविध रूपों को देखा जा सकता है। राष्ट्रीय चेतना की विशद कल्पना में जिन विभिन्न पक्षो का पूवावर्ती पृष्ठों मे विवेचन किया गया है, कहना न होगा कि इनमें से अधिकांश स्वरूप साठोत्तरी कथा साहित्य में प्राप्त है। इस अध्ययन से स्पष्ट है कि राष्ट्र के स्वस्थ एवं गौरवशाली स्वरूप निर्माण में गद्यकारों की राष्ट्रीय चेतना विविधोन्मुखी है। देश की सुरक्षा, सुदृढ़ राजनीतिक व्यवस्था,जनहितलक्षी शासननीतियाँ,संगठित सामाजिक व्यवस्था,आधुनिक परिवर्तीत सामाजिक भावबोध, सामाजिक-सांस्कृतिक संकट आदि का कहीं विस्तृत तो कहीं संक्षिप्त रूप में निरूपण करते हुए राष्ट्र की उन्नति, विकास और गौरव के मार्ग को प्रशस्त करने का यत्न किया गया है। यह मेरा एक विनम्र प्रयास है। मुझे विश्वास है कि एक अंकिचन और अबुध बालक द्धारा किया गया यह परिश्रम विद्धानजन उदारता से स्वीकार करेंगे। इस अध्ययन सूत्रों को विद्धानों की लेखनी का सम्बल प्राप्त हो तो भविष्य में इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य प्रकाश में आने की पूरी संम्भावना देखी जा सकती है।गद्य की अन्य विधाओं में भी राष्ट्रीय चेतना के स्वरूप पर प्रकाश डाला जा सकता है।